सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

पिता केा हमेंशां बच्चें केा आगे बढ़ते हुए देख खुश होता है।उसे नाज़ हाता है जब उनके बच्चे उचाईयों छूते है। एसे प्राणेश्वर बाप ने हमारें पर क्या आशायें और उम्मीदें रखी है । जरा उनके महावाक्यों पर नज़र डालतें है....।

19-10-11 से 3- 4 -12 तक की अव्यक्त वाणियों का सार

19-10-11 की वाणी से

बाप को हर बच्चे में यही आश है कि हर बच्चा बाप समान बन जाए। इसके लिए हर कदम उठाते पहले यह चेक करो कि यह ब्रह्मा बाप के कदम अनुसार है?

बापदादा यही चाहते हैं कि जैसे ब्रह्मा बाप ने हर बच्चे के प्रति रहम और कल्याण की भावना रखी, ऐसे हरेक भाई या बहन के प्रति शुभभावना, शुभकामना, रहम और कल्याण की दृष्टि से उनके सहयोगी बनो। अपने मन को चलाने वाले मन के रचता हो। मन घोड़ा है तो आपके पास श्रीमत की लगाम है। मन के मालिक बन मन को ऐसे बिजी करो जो और तरफ आकर्षित न हो। आपस में संस्कार मिलन की रास करो। चेक करो कोई भी हमारे से नाराज नहीं, लेकिन भारी भी नहीं हो। अपने को ऐसे सम्पन्न बनाओ जो आप सबकी सम्पन्नता मुक्ति का गेट खोल दे।

15-11-11 की वाणी से

बापदादा बच्चों को आज्ञा करते हैं कि जिनकी भी सेवा करते हो, एक ही समय पर तीन रुपों और तीन रीति से सेवा करो। तीन रुप हैं -नालेजफुल, पावरफुल और लवफुल और तीन रीति हैं -मनसा, वाचा और कर्मणा। वाणी के साथ-साथ मनसा भी पावरफुल हो, जिससे आत्माओं की मनसा परिवर्तन हो जाए और कर्म द्वारा सेवा से वह आत्माएं अनुभव करें कि सचमुच हम अपने परिवार में आ गये। तो बापदादा यह तीनों रुप की सेवा एक साथ चाहते हैं। बच्चों के पुरुषार्थ की गति फास्ट होनी चाहिए। अभी स्वयं भी निर्विघ्न रहो और अपने साथियों को, सम्बन्ध में आने वालों को भी निर्विघ्न बनाओ। समय को समीप लाओ।

30-11-11 की वाणी से

एक-एक सेकण्ड सफल हो, बहुत समय का अटेंशन चाहिए। बापदादा हर बच्चे को बालक सो मालिक देखना चाहते हैं। सर्व खजानों का मालिक।

सदा अपनी सीट पर सेट रहो, इसका अभ्यास सदा करो। सीट पर सेट हैं तो सर्व शक्तियां हाजिर होती हैं।

बापदादा यही चाहते हैं कि अमृतवेले लाइट माइट स्वरुप के अनुभवी मूर्त हो बैठो, क्योंकि अमृतवेले की सकाश सारे वायुमण्डल में फैलती है।

सेकण्ड में जहां चाहो वहां स्थित हो जाए, ऐसा अभ्यास है? जिस समय जो स्थिति चाहो उससे उड़ती कला की स्थिति के अनुभव में आ जाओ। यही अभ्यास समय-समय पर काम में आयेगा।

15-12-11 की वाणी से

सबसे श्रेष्ठ है बापदादा का दिलतख्त। बापदादा के दिलतख्त पर कौन बैठता है? जिसने सदा स्वयं भी बापदादा को अपने दिलतख्त पर बिठाया है, जो सदा श्रेष्ठ स्थिति में मा.सर्वशक्तिवान है। तो चेक करो सदा तख्तनशीन हैं?

तीव्र पुरूषार्थ करने के लिए मुख्य पुरुषार्थ है सेकण्ड में बिन्दी लगाना। अब बापदादा बच्चों का बेफिक्र बादशाह का रुप देख रहे हैं। इसके लिए मेरे को तेरे में समा दो।

गुरूवार के दिन चेक करते रहो आज कितना समय वरदान स्वरुप रहे? सण्डे के दिन स्वप्न मात्र भी जो कमजोरी हो उसको छुट्टी देना है। लक्ष्य के साथ लक्षण को अटेन्शन में रखो।

सेवा करके उलाहना पूरा करना है। उमंग है तो बापदादा का सहयोग भी है। दो शब्द बाप चाहते हैं समान और सम्पूर्ण, इसको सम्पन्न करना ही है।

31-12-11 की वाणी से

यह दृढ़ संकल्प करना है कि कभी भी किसी भी सरकमस्टांस प्रमाण कोई भी व्यर्थ संकल्प न कर सदा हर आत्मा के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखनी ही है। ब्रह्मा बाप के साथी बनकर राज्यअधिकारी बनना है ना! तो ब्रह्मा बाप समान तो बनना पड़े।

योग में अमृतवेले अभी बापदादा नवीनता चाहते हैं। अभी ज्वालामुखी योग चाहिए। ज्वालामुखी योग अर्थात लाइट माइट स्वरुप शक्तिशाली। ज्वालामुखी योग द्वारा ही जो भी संस्कार रहे हुए हैं वह भी भस्म होने हैं। दु:खी परेशान आत्माओं को विशेष ज्वालामुखी योग द्वारा शक्तियां देने की आवश्यकता पड़ेगी।

अपने लिए समय निश्चित करो कि कब तक अपने को बाप समान बनाएंगे। आज हर बच्चे को यही वरदान दे रहे हैं कि हर बच्चा तीव्र पुरूषार्थी भव।

दिनचर्या में याद रखना मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। फरिश्ता स्वरुप में रहना इसको ही कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ।

बापदादा विशेष वरदान दे रहे हैं -सदा संतुष्टमणि भव। संतुष्ट रहना, संतुष्ट करना।

-शेष अगले अंक में।

भगवान ने खोला ..

पेज 8 का शेष ...

प्रतिदिन ही जमा करना है। खाता ऋण रुप में न जाए। और ऐसा तब होता है जब एक ब्राह्मणात्मा सूक्ष्म पापकर्म करने लगती है। दूसरा खाता है -दुवाओं का खाता। यह खाता दूसरों को सुख देने को, संतुष्ट करने से, दूसरों को समय पर मदद करने से व स्वयं संतुष्ट रहने से बढ़ता है। तीसरा है पुण्य कर्मों का खाता -भिन्न-भिन्न तरह से निष्काम भाव व बेहद की वृत्ति से श्रेष्ठ कर्म करने से यह खाता बढ़ेगा।

अब इन तीन खातों में सभी खजाने जमा करने हैं। एक-एक खजाने का भविष्य से क्या सम्बन्ध है, संक्षिप्त में लिख रहे हैं। जैसे हम यहां बैंक में धन जमा करते हैं कि भविष्य में हमें काम आयेगा। ऐसे ही...यदि आप जन्म-जन्म धन-धान्य से सम्पन्न रहना चाहते हैं तो इस बैंक में ज्ञान का खजाना जमा करें। वैसे भी सिद्धांत है कि यहाँ भी जिसके पास ज्ञान-धन है, उसे स्थूल धन कमाने में मेहनत नहीं लगती। ये ज्ञान का खजाना -ज्ञान-दान से, ज्ञान-मनन से व ज्ञान-अध्ययन से बढ़ता है। यदि आप जन्म-जन्म स्वस्थ जीवन चाहते हैं तो मनमनाभव में स्थित रहें।

यदि आप पूरे चक्र में अनेक बार राज्याधिकार चाहते हैं तो शक्तियों का खजाना जमा करें। यह खजाना योग-युक्त रहने से, शक्तिशाली संकल्पों में रहने से व मास्टर सर्वशक्तिवान की स्मृति से बढ़ता है। यदि आप चाहते हैं कि हर जन्म में आप सुख-शांति से भरपूर रहें तथा चरित्रवान रहें तो पवित्रता के खजाने को बढ़ायें। पवित्रता ही सुख-शांति की जननी हैं।

यदि आप चाहते हैं कि द्वापर से भी आप श्रेष्ठ कर्म, दान पुण्य करते रहे तो आप यहीं पुण्यों का खाता बढ़ायें। आपके पुण्य कर्म आपको बल भी प्रदान करें इसके लिए निष्काम भाव अपना लें।

यदि आपकी इच्छा है कि प्रत्येक जन्म में आपके पास सुंदर बुद्धि हो तो आप यहाँ ज्ञान व पवित्रता के बल से दिव्य बुद्धि प्राप्त करें व बुद्धि में अहम् न आने दें। विद्या का दान भी करें।

यदि आप चाहते हैं कि हर जन्म में, सम्बन्धों में पारस्परिक स्नेह रहे तो यहाँ श्रेष्ठ गुणों से अपना श्रृंगार करें। प्यार बांटें व परमात्म प्यार में मगन रहें। यहाँ जो कुछ आप देंगे, जन्म-जन्म उसी में सदा भरपूर रहेंगे।

यदि यहाँ आप समय को सफल करेंगे -सफल करना ही जमा करना है तो कभी भी समय आपको धोखा नहीं देगा। ठीक समय पर भाग्य आपको साथ देगा व सफलता आपके चरण चूमेगी।

यदि यहाँ आप ईश्वरीय खुशी से अपनी झोली भरेंगे तो हर जन्म में खुशी आपके साथ रहेगी। आपको खुशी के लिए यहाँ-वहाँ भटकना नहीं पड़ेगा।

इसी तरह श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना बढ़ानेसे जन्म-जन्म आपके विचार महान व दूसरों के लिए प्रेरणास्पद रहेंगे। पवित्रता का खजाना बढ़ाने से आप धर्म को बल देने वाले होंगे।

यदि यहाँ आपने दुवाओं का खजाना इकट्ठा किया तो जन्म-जन्म हर कदम पर आपको सरलता से समस्याओं को पार करने का अनुभव होगा और आपकी जड़ मूर्तियों से भी दूसरों को दुवाएं मिलती रहेंगी। इसके परिणाम स्वरुप वहाँ भी आपका जीवन संतुष्टता से सम्पन्न रहेगा।

तो कर लें दिल भरकर इन खजानों को जमा। श्रेष्ठ पुरुषार्थ की धुन लगा दें। सेवा में सच्ची भावना से योगदान करें तथा कोशिश करें दाता बनकर सबको संतुष्ट करने की।

कोट्टयम। ब्र.कु.पंकज बहन को समाज की आध्यात्मिक सेवाओं के लिए अवार्ड देकर सम्मानित करते हुए रोटरी क्लब के सदस्य।

नागपुर। अंतर्राष्ट्रीय बाल कलाकार गायक मयंक साहू को 'सुरदेव' की उपाधि से सम्मानित करते हुए विदर्भ की मुख्य संचालिका ब्र.कु.पुष्पारानी।

फिलीपींस। भारतीय राजदूत रजीत मित्तर द्वारा विशेष रुप से ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के लिए स्नेह-मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विशेष आमंत्रित हैं ब्र.कु.जयंति तथा ब्र.कु.रजनी।

इंदौर। रोटरी क्लब में 'तनाव मुक्त जीवनशैली' को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.गीता बहन तथा ध्यानपूर्वक सुनते हुए क्लब के सभी सदस्य।

अम्बाजोगई। रक्तदान के पश्चात् डॉ.बालचंद्रन से 'स्मृति चिन्ह' प्राप्त करते हुए ब्र.कु.मंजु बहन।

वैंगलूरु। मैनेजिंग डायरेक्टर श्रीनिवास राजु, जनरल सचिव डॉ.उडडे पी.कृष्णा, सरला दादी जी तथा अन्य समूह चित्र में।